क्रिसमस कैरॉल/आनंद के गीत

''स्वर्ग में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर भले लोगों को शांति मिले।'' स्वर्गदूतों का यह गाना क्रिसमस कैरॉल के केन्द्र में है। यह आनंद का गीत है। इसके बारे में चरवाहों ने शिशु ईसा को देखने के बाद बताया। ''Silent night, Holy night, Noel, noel, Joy to the world, Jingle bells", आदि कुछ प्रसिद्ध कैरॉल गाने हैं जिनको यूरोप में लिखा गया और आज दुनिया भर के कई देशों में अपनी-अपनी भाषा में इन्हें गाया जाता है। आज कई जगहों में कैरॉल प्रतिस्पर्धा का आयोजन होता है। कई चर्च की गायक-मंडली अपने इलाके के परिवारों में जाकर कैरॉल गाना गाने की प्रथा है। वे अपने साथ शिशु ईसा की मूर्ति लिये चलते हैं। गाना के अन्त में परिवार को शांति और प्रेम का संदेश देकर क्रिसमस की शुभकामनाएँ देते हैं।

क्रिसमस ट्री/वृक्ष

क्रिसमस ट्री की शुरूआत जर्मनी में हुई जिसका प्रतीक अर्थ अदन वाटिका के ''जीवन का वृक्ष'' है और क्रूस का वृक्ष है। कहा जाता है कि 16वीं सदी में प्रोटेस्टंट सुधारक मार्टिन लूथर ने जली मोमबत्ती को एक वृक्ष के साथ जोड़ दिया। 17 वीं शताब्दी तक आते-आते ''खीस्त वृक्ष'' के रूप में स्थापित कर एक परंपरा की शुरूआत कर दी गई। यह परंपरा धीरे-धीरे यूरोप और विश्व के अन्य देशों में भी शुरू हो गई। आज क्रिसमस ट्री को बहुत ही चमकीली रंगीन कागजों व बैलून से श्रृंगारा जाता है उसमें कई तोहफे भी टांग दिये जाते हैं जो एक दूसरे को देने के लिए होते हैं। साथ ही इसे बिजली के उपकरणों से भी रंग-बिरंगी रोशनी से रौशन कर दिया जाता है।

सान्ता क्लॉस

सान्ता क्लॉस या क्रिसमस पापा के संबंध में कई किंवदंतियाँ हैं लेकिन कहा जाता है कि टर्की में स्थित मिर्ना के बिशप निकोलस 4थी सदी में हुए जो बेहद धनी, उदार और बच्चों को अत्यधिक प्यार करते थे। बहुधा वह गरीब बच्चों को कोई उपहार देकर प्रसन्न किया करते थे। वह बाद में संत निकोलस बने लेकिन उनकी लोकप्रियता के कारण संत निकोलस से सांता निकोलस और बाद में चलकर सान्ता क्लॉस बन गये। इस तरह यूरोप और अमरीका में इसी नाम से प्रसिद्ध हो गये। आज पूरी दुनिया में सान्ता क्लॉस अत्यंत लोकप्रिय हो गये हैं। वह एक बुजुर्ग आदमी हैं जो उतरी ध्रुव से आते हैं। कड़ाके की ठंड की वजह से वह लाल मोटे कपड़े पहने उपहार व मिठाइयों से भरे झोले गले पर डाल कर हिरन की प्रजाति के जानवर की सवारी पर आते हैं और बच्चों से भेंटकर उन्हें तरह-तरह की मिठाई एवं तोहफा दे जाते हैं।

We wish you all Merry Christmas and a Grace filled New Year !
May your families be blessed with Joy, Peace and Love !

आप सबों को क्रिसमस की हार्दिक शुभकामनाएँ !
नव वर्ष आप सभी के लिए मंगलमय हो !

Presentation by **Patna Peace Mission**

अमन का संदेश क्रिस्मस

खीस्त जयंती मुबारक हो!

क्रिसमस पर्व आज से करीब 2000 वर्ष पूर्व 25 दिसम्बर को येसु खीस्त के मनुष्य के रूप में एक गौशाले में जन्म लेने की याद में मनाया जाता है। क्रिसमस पर्व के दिन हम लोग सांता क्लॉज, क्रिसमस ट्री, कैरोल गायन, गौशाले, मोमबत्तियों और सितारों की चमक, घंटियों की खनक, चारों तरफ सुन्दर सजावट, बिजली के जगमगाते बल्ब, ग्रीटिंग्स कार्ड, केक, गीत-संगीत, महकते फूल और चहकते बच्चों को देख कर कह उठते हैं- *"हैप्पी क्रिसमस!"* लेकिन ऐसा क्रिसमस आज की दुनिया में कितने लोगों को नसीब होता है? यह एक अनोखा त्योहार है, जो पृथ्वी की समस्त मानव जाति को ईश्वर के प्रेम, शान्ति, आनन्द एवं उद्धार तथा भाईचारा और परोपकार का पावन सन्देश देता है। इसलिए ही सारा विश्व येसु खीस्त के जन्म अर्थात क्रिसमस पर खुशियाँ मनाता है। यह मानव जाति के उद्धार के लिए परमेश्वर के द्वारा की गई पहल को दर्शाने वाला त्योहार भी है।

विश्व के प्रत्येक स्थान में जहाँ खीस्तीय रहते हैं, खीस्त जयन्ती का त्योहार बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। सारा संसार खीस्त जयन्ती से वाकिफ है। हम इस त्योहार को हर्षोल्लास के साथ क्यों मनाते हैं? यह इसलिए कि ईसा के रूप में ईश्वर इन्सान बनकर मरियम एवं जोसेफ के परिवार में इसी दिन बेतलेहेम में जन्म लिए थे। वे सबों की मुक्ति के लिए धरा पर आए। वे खुशी एवं शांति का पैगाम लेकर इस दुनिया में पदार्पण किए। वे अंधकार में चलने वालों को रोशनी तथा भटके हुए लोगों को रास्ता दिखाने के लिए पैदा हुए। उन्होंने पड़ोसी प्रेम, मानव सेवा, परोपकार आदि का उदाहरण दिया। ईसा ने मानव मुक्ति का रास्ता दिखाया।

दो हजार वर्ष पूर्व प्रभु येसु का जन्म फिलिस्तीन में एक साधारण परिवार में हुआ था। नाजरेथ नामक एक छोटी-सी बस्ती में उन्होंने अपना जीवन बिताया। उनकी माता मरियम और संरक्षक पिता युसुफ के साथ वे रहे और बढ़े। मरियम श्रद्धालु थी। युसुफ विनीत और साधु स्वभाव का था।

प्रभु येसु मसीह का जन्म राजमहल में नहीं, एक पशुशाला में हुआ। महानगर में नहीं एक अनजान गाँव बेथलेहेम में हुआ। घोड़ा नहीं, गदहा उनका जानवर रहा। राजगद्दी पर विराजने के लिए नहीं, क्रूस पर प्राण देने आया। उनके पास न सोना, न सेना, न पद, न सत्ता थी। केवल प्रेम, सत्य और क्षमा बल था। उनके अन्दर मानवता कूट-कूट कर भरी हुई थी।

ईसा का जन्म स्वर्ग का पृथ्वी से मिलन था। उनका लक्ष्य स्वर्ग को पृथ्वी पर लाना था, पृथ्वी पर ईश्वर के राज्य की स्थापना करनी थी। स्वार्थ, शोषण, अत्याचार, झूठ, अन्याय जैसी बुराइयों से उद्धार कर मनुष्य को मानवीय और ईश्वरीय गुणों से भर देना था। न्याय, प्रेम, सत्य, कोमलता, समझदारी, अपनापन, ईमानदारी आदि दिल के गुणों से मनुष्य को विभूषित करना था।

प्रभु येसु मसीह का जन्म मानवता का सन्देश लेकर आता है। प्रभु येसु ने अपने शिक्षा एवं उपदेशों में इन्सान को केन्द्र में रखा। प्रेम और क्षमा को धर्म का सार माना। उन्होंने मानवीय रिश्तों पर बल दिया। उन्होंने मानव गरिमा एवं सामूहिक हित के लिए निरन्तर संघर्ष किया। उन्होंने असत्य, अन्याय एवं बुराई से कभी समझौता नहीं किया। उन्होंने हर एक में बिना किसी भेदभाव, जाति, धर्म, लिंग, क्षेत्र, भाषा, इन्सान को देखा और इन्सान को इन्सान से जोड़ा। प्रभु येसु की नजर में हर इन्सान मूल्यवान और महत्वपूर्ण है, अनोखा एवं सुन्दर है। हर इन्सान ईश्वर का प्रतिरूप है। प्रभु येसु का सम्पूर्ण जीवन करुणा से भरा हुआ था।

अध्यात्म एवं मानवता ईसाई धर्म की रीढ़ है। जहाँ मानवता नहीं है, वह धर्म नहीं है, क्योंकि धर्म का मूल मर्म मानवता है। मानवीयता का मूल अर्थ मनुष्य को मनुष्य मान कर उसके साथ व्यवहार करना है। यही सच्चा प्रेम है। प्रेम ही मानवीय धर्म है। प्रेम का स्वरूप परहित है। मानवता हमारी आस्था की सच्चाई का प्रतीक है। मानवीयता धर्म का मापदण्ड और मूल तत्व है। प्रभु ईशा ने यही सिखाया है।

खीस्त धर्म और खीस्त जयंती का महान और प्रमुख संदेश यह है कि ईश्वर ने संसार को इतना अधिक प्यार किया कि उसने अपने इकलौते पुत्र को पृथ्वी पर भेज दिया, जिससे संसार नष्ट न हो जाये और शाश्वत जीवन रूपी प्रकाश पाये।

अत: ईश्वर को कहीं और खोजने के बदले हम सबको अपने भाई-बहनों में उसकी खोज करनी चाहिए। इसलिए हम अपने पड़ोसियों की सेवा, आदर और प्रेम करने में अपने जीवन का सारा समय व्यतीत करें। येसु कहते हैं, 'भ्रातृ-प्रेम' ही सबसे श्रेष्ठ प्रेम है।

हमारे देश में धर्मों की कमी नहीं, मानवता की कमी है। हर क्षेत्र में विकास तो बहुत हुआ हैं, लेकिन मानवता में गिरावट आ रही है। यदि हममें मानवता न हो, पतन निश्चित है। बालक येसु का जन्म लोगों को इस पतन के गर्त से मानवता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है, जो वर्तमान परिवेश में बहुत ही प्रासंगिक है।

इसलिए आज, इस क्रिसमस पर्व के दिन, हमारा यह दायित्व है कि हम प्रभु येसु के अत्यन्त सरल एवं सुन्दर उपदेशों का अनुसरण कर, उन्हें अपने में आत्मसात करें और गरीब, दलित, दमित और असमानता के शिकार हुए लोगों की कराहती जिन्दगी में उस बेतलेहेम के चमकते तारे जैसे चमकते हुए, उनका मार्गदर्शन करें और अपनी कोशिशों से उनके चेहरे पर थोड़ी-सी मुस्कान लाएँ एवं उनके क्रिसमस को भी 'हैप्पी क्रिसमस' बना दें, तभी हमें क्रिसमस की वास्तविक खुशियाँ मिलेंगी।

प्रभु येसु अपने जयन्ती के शुभ अवसर पर आप सभी को अपने नन्हें पावन हाथों से आर्शीवाद दें। इस पुण्य अवसर पर हम देश के सभी भाई-बहनों के प्रति सहज-स्नेह, शान्ति एवं आनन्द की शुभकामनाएँ अर्पित करते हैं।

चरनी/क्रिसमस क्रिब

क्रिसमस समारोह का केन्द्र चरनी होता है जहाँ चरनी में लेटे शिशु ईसा हैं। ईसा का जन्म बेतलेहम के एक गोशाले घर में हुआ था क्योंकि किसी ने उन्हें जगह नहीं दी। जन्म के बाद उसकी माँ मरियम ने उसे काठुत मवेशियों का चारा डालने वाला लकड़ी का औजार में लिटा दिया था। इसकी सूचना सबसे पहले चरवाहों को देवदूतों ने यह उद्घोषणा करते हुए दिया था, "स्वर्ग में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर भले लोगों को शांति मिले।"

कहा जाता है कि क्रिसमस क्रिब का प्रचलन संत असीसी के संत फ्रांसिस ने 13वीं शताब्दी में इटली में की थी। उसके बाद फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल, पोलैंड और अन्य रोमन काथलिक देशों में फैल गया।

क्रिसमस क्रिब घर और चर्चों में बनाया जाता है। इस क्रिब में शिशु ईसा चरनी में लेटे पाये जाते हैं जिसकी अगल-बगल माता मरियम और संत जोसेफ की खड़ी मूर्तियाँ होती हैं और मवेशियों की मूर्तियाँ चारों तरफ होती हैं। तीन ज्ञानियों की मूर्तियाँ अपनी-अपनी ऊँट एवं कीमती उपहार के साथ दिखाये जाते हैं जो एशिया के बताये जाते हैं और ईसा के तारे का पीछा करते हुए ईसा के जन्मस्थान तक पहुंच सके थे। क्रिसमस क्रिब हमें खीस्त जयंती के अर्थ का स्पष्टत: स्मरण दिलाता है कि मानव जीवन के केंद्र में कुछ है तो वह प्रेम ही है।